सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

प्रथम सप्ताह

स्वमान - मैं संतुष्टमणि आत्मा हूँ।

शिवभगवानुवाच - आज बापदादा अपनी संतुष्टमणियों को देख रहे हैं.... संतुष्टमणियों की चमक चहुं ओर फैल रही है। हर संतुष्टमणि सबको, स्वयं को व बाप को अति प्यारी है। संतुष्टता सर्व प्राप्ति सम्पन्न है, जहां संतुष्टता है, वहां अप्राप्त नहीं कोई वस्तु...संतुष्टता की शक्ति चारों ओर वायुमण्डल को श्रेष्ठ बनाती है। संतुष्ट आत्मा का चेहरा व नयन वायुमण्डल में संतुष्टता की लहर फैलाते हैं।

संतुष्टता संगमयुग में परमात्म-देन है, इससे सभी विशेषताएं आ जाती हैं, संतुष्टता की स्थिति परिस्थितियों पर विजयी बनाती है। संतुष्टमणि के लिए परिस्थितियां मनोरंजन बन जाती हैं। वह परिस्थितियों से परेशान नहीं होती। वे सदा साक्षीदृष्टा की स्थिति में स्थित रहते हैं।

तुम बच्चे बाप के राजदुलारे हो। लाडला वही है जो बाप को फालो करे। 'अपने को आत्मा समझ निरंतर बाप को याद करो' -इस महामंत्र को फालो करने से सब बातों में स्वत: ही फालो फादर हो जाएगा। हे लाडले प्यारे बच्चों, संतुष्टमणि बन विश्व में संतुष्टता की लाइट फैलाओ। यदि कोई आत्मा आपसे असंतुष्ट होती भी है तो उसकी असंतुष्टता का प्रभाव आप पर न आये बल्कि आप उसे शुभकामना व शुभभावना का दान दो। अपने को सदा उनके वायब्रेशन्स से न्यारा व बाप का प्यारा अनुभव करो तो इस न्यारे व प्यारेपन के वायब्रेशन्स वायुमंडल में फैलेंगे जरूर...। जब कोई गलती करता है तो आप उसे फोर्स में कुछ कहते हो तो क्या यह गलती नहीं है। क्या गलत गलत को ठीक कर सकता है? मुख से ऐसे बोल निकलें जैसे फूलों की वर्षा हो रही हो। मीठा बोल, मुस्कुराता चेहरा, मीठी दृष्टि, मीठी वृत्ति, मीठा सम्बन्ध-सम्पर्क ये ही सर्विस का साधन है। जोर से बोलने से तो दूसरे आपसे डरेंगे व समीप नहीं आयेंगे।

बाप हर एक को विजयी रत्न देखना चाहते हैं। जब मेरा बाबा कहते हो तो मेरा वर्सा भी तो है। मेरा वर्सा माना बाप समान बनना। बाप का तो हर बच्चा राजा बच्चा है, स्वराज्य अधिकारी है।

समय नाजुक आ रहा है। उसके लिए बार-बार अशरीरीपन का अभ्यास करो। इस बहुत काल के अभ्यास से ही अचल अडोल रह सकेंगे। बार-बार ये अभ्यास करे से नेचुरल स्थिति बन जाएगी। बापदादा तो आपको विश्व स्टेज पर हीरो एक्टर बनाना चाहते हैं। बहुत हाहाकार होगा। उस समय आपको सकाश देनी होगी। इसमें ही आपकी कमाई होगी और जितनों को आप सकाश देंगे वे आपके भक्त बन जाएंगे।

द्वितीय सप्ताह

प्यारे बापदादा ने श्रीमत दी है कि दुआएं लेनी है और दुआएं देनी है। कोई कैसा भी हो, चाहे कोई बद्दुआ दे, इनसल्ट करे, तो भी हमें उसके प्रति अपनी भावनाओं को खराब नहीं करना है। ईश्वरीय महावाक्य हैं -जो बच्चे एक बार भी सहन कर लेते हैं वह सौ गुना परमात्म दुआओं के अधिकारी बन जाते हैं।

स्वमान -मैं बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण हूँ - बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण अर्थात जो बाप में गुण और शक्तियां हैं वही मुझमें हैं..जो बाप के संकल्प, बोल और कर्म हैं वही मेरे भी हों...जो बाप के संस्कार वही मेरे भी संस्कार। यदि बाप को प्रत्यक्ष करना है तो जैसे बाप सम्पन्न और सम्पूर्ण हैं ऐसे बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनकर पहले स्व को प्रत्यक्ष करें। जब स्व को प्रत्यक्ष करेंगे तो बाप स्वत: ही प्रत्यक्ष हो जायेगा।

योगाभ्यास - रूहानी एक्सरसाइज। जैसे शरीर को शक्तिशाली बनाने के लिए शारीरिक एक्सरसाइज आवश्यक है ऐसे मन को शक्तिशाली बनाने के लिए मानसिक एक्सरसाइज भी आवश्यक है -इसके लिए हर घण्टे में कम से कम पांच मिनट में पांच स्वरूपों का अभ्यास करो -पहले स्वयं को परमधाम में ज्ञानसूर्य की किरणों के नीचे देखें..फिर सूक्ष्म वतन में स्वयं को फरिश्ता रूप में देखें..फिर अपने पूज्य स्वरूप को याद करें...फिर अपने ब्राह्मण स्वरूप को याद करें...फिर अपने देवता स्वरूप को देखें। सारे दिन में यह अभ्यास चलते-फिरते भी कर सकते हैं..इससे मन में सदा खुशी रहेगी, उमंग-उत्साह बढ़ेगा और सदा उड़ती कला का अनुभव होता रहेगा।

धारणा -दुआएं लो और दुआएं दो।

सबसे सहज पुरूषार्थ है -दुआएं दो और दुआएं लो। इसके लिए सर्व के प्रति अपनी भावनाओं को श्रेष्ठ रखो। कोई भी निगेटीव बात मन में नहीं रखो। यदि कोई किसी की निगेटीव बात को सुनाता भी है तो एक कान से सुन दूसरे से निकाल दो। अपनी श्रेष्ठ वृत्ति के वायब्रेशन्स द्वारा वायुमण्डल को ऐसा बनाओ जो कोई भी आपके सामने आए तो वह कुछ न कुछ स्नेह और सहयोग का अनुभव करे, क्षमा का अनुभव करे, हिम्मत का अनुभव करे, उमंग-उत्साह का अनुभव करे। दातापन से प्राप्ति का अनुभव कराना।

चिन्तन -पुरूषार्थ में तीव्रता न होने का कारण..? सदा तीव्र पुरूषार्थी कैसे बनें? तीव्र पुरूषार्थी आत्माओं की निशानियां?

साधकों के प्रति -प्रिय साधकों...अब बापदादा समय की तीव्र गति प्रमाण हम सभी बच्चों को सदा तीव्र पुरूषार्थी के रूप में देखना चाहते हैं। तीव्र पुरूषार्थी अर्थात सोचना और करना एक समान हो...। याद रहे यदि हम अभी तक भी सोचने..एक दूसरे को देखने में समय गंवाते रहे तो भविष्य की प्राप्ति से वंचित रह जाएंगे...इसलिए अब आलस्य और अलबेलेपन के संकल्पों को त्याग मन में सदा यही दृढ़ता रहे कि जो करना है वह अभी करना है। अभी नहीं तो कभी नहीं...तब कहेंगे..सच्चे-सच्चे तीव्र पुरूषार्थी आत्मा। इस नये वर्ष में बापदादा की आशाओं को पूरा करना है।

आस्का। उड़ीसा सरकार की विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री उषा देवी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.पार्वती।

पालमपुर। रानी सेवा सदन के सचिव ओंकार सूद, पूर्व डीसी चमेल जी, ब्र.कु.अमीरचंद, व्यापारी शांति स्वरुप, ब्र.कु.प्रेम समूह चित्र में।

कुमटा (कर्नाटक)। प्लेटिनम जुबली कार्यक्रम में स्वीडन से आए ब्र.कु. लाजोस, विधायक दिनकर के.शेट्टी, ब्र.कु.डॉ.बसवराज, सी.विजय कुमार, ब्र.कु.मोनार्का, ब्र.कु.निर्मला तथा ब्र.कु.गीता।

नाभा। संतजनों को ईश्वरीय ज्ञान देने के पश्चात ब्र.कु.बीना व ब्र.कु.रेखा।

कोडक। ज्योतिर्लिंगम प्रदर्शनी कार्यक्रम पर शांतियात्रा का शुभारंभ करते हुए ब्र.कु.शकुंतला तथा ब्रह्माकुमार भाई-बहनें।

हरदुआगंज। उपेन्द्र सिंह ब्लाक प्रमुख को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.शीला, ब्र.कु.कमलेश, ब्र.कु.रचना तथा ब्र.कु.सत्यप्रकाश।

किच्छा (बरेली)। नगरपालिका के अधिशासी अधिकारी नरेन्द्र कुमार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.सरोज।

अजमेर। राजस्थान की प्रतिपक्ष की नेता वसुंधरा राजे सिंधिया को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.रुपा व ब्र.कु.अंकिता।